

वल्लयिप्पन उलगनाथन चर्दिबरम पल्लिर्ई

प्रलिम्स के लयि:

स्वतंत्रता आंदोलन, स्वदेशी आंदोलन, बाल गंगाधर तलिक, लाला लाजपत राय ।

मेन्स के लयि:

वी. ओ. चर्दिबरम पल्लिर्ई ।

चर्चा में क्यों?

प्रधानमंत्री ने 5 सितंबर, 2022 को महान स्वतंत्रता सेनानी वी.ओ.चर्दिबरम पल्लिर्ई को उनकी 151वीं जयंती पर श्रद्धांजलि अर्पित की ।

- वह एक लोकप्रिय कप्पलोटिया थमज़िान (तमलि खेवनहार) और "चेक्कल्लिथथा चेम्मल" के रूप में जाने जाते थे ।



चर्दिबरम पल्लिर्ई:

- जन्म:** वल्लयिप्पन उलगनाथन चर्दिबरम पल्लिर्ई (चर्दिबरम पल्लिर्ई) का जन्म 5 सितंबर, 1872 को तमलिनाडु के तरिनेलवेली ज़िले के ओट्टापडिारम में एक प्रख्यात वकील उलगनाथन पल्लिर्ई और परमी अम्माई के घर हुआ था ।
- प्रारंभिक जीवन:** चर्दिबरम पल्लिर्ई ने कैलडवेल कॉलेज, तूतीकोरनि से स्नातक किया । अपनी कानून की पढ़ाई शुरू करने से पहले उन्होंने एक संक्षिप्त अवधि के लिये तालुका कार्यालय में क्लर्क के रूप में कार्य किया ।
 - वर्ष 1900 में न्यायाधीश के साथ उनके विवाद ने उन्हें तूतीकोरनि में नए काम की तलाश करने के लिये बाध्य किया ।
 - वर्ष 1905 तक वे पेशेवर और पत्रकारिता गतिविधियों में संलग्न रहे ।
- राजनीति में प्रवेश:**
 - चर्दिबरम पल्लिर्ई ने 1905 में बंगाल के विभाजन के बाद राजनीति में प्रवेश किया ।
 - वर्ष 1905 के अंत में चर्दिबरम पल्लिर्ई ने मद्रास का दौरा किया और बाल गंगाधर तलिक तथा लाला लाजपत राय द्वारा शुरू किया गए स्वदेशी आंदोलन से जुड़े ।
 - चर्दिबरम पल्लिर्ई रामकृष्ण मशिन की ओर आकर्षित हुए और सुब्रमण्यम भारती तथा मांडयम परिवार के संपर्क में आए ।

- तूतीकोरनि (वर्तमान थूथुकुडी) में चर्दिबरम पल्लिई के आने तक तरिनेलवेली ज़िले में स्वदेशी आंदोलन ने गतिप्राप्त करना शुरू नहीं किया था।
- **स्वतंत्रता आंदोलन में भूमिका:**
 - 1906 तक चर्दिबरम पल्लिई ने स्वदेशी स्टीम नेवगिशन कंपनी (SSNCO) के नाम से एक स्वदेशी मर्चेंट शिपिंग संगठन स्थापित करने के लिये तूतीकोरनि और तरिनेलवेली में व्यापारियों एवं उद्योगपतियों का समर्थन हासिल किया।
 - उन्होंने स्वदेशी प्रचार सभा, धर्मसंग नेसावु सलाई, राष्ट्रीय गोदाम, मदरास एगरो-इंडस्ट्रियल सोसाइटी लिमिटेड और देसबीमना संगम जैसी कई संस्थाओं की स्थापना की।
 - चर्दिबरम पल्लिई और शविा को उनके प्रयासों हेतु तरिनेलवेली स्थिति कई वकीलों द्वारा सहायता प्रदान की गई, जिन्होंने स्वदेशी संगम या 'राष्ट्रीय स्वयंसेवक' नामक एक संगठन का गठन किया।
 - तूतीकोरनि कोरल मलिस की हड़ताल (1908) की शुरुआत के साथ राष्ट्रवादी आंदोलन ने एक द्वितीयक चरित्र प्राप्त कर लिया।
 - गांधीजी के **चंपारण सत्याग्रह** (1917) से पहले भी चर्दिबरम पल्लिई ने तमलिनाडु में मज़दूर वर्ग का मुद्दा उठाया था और इस तरह वह इस संबंध में गांधीजी के अग्रदूत रहे।
 - चर्दिबरम पल्लिई ने अन्य नेताओं के साथ मलिकर 9 मार्च, 1908 की सुबह बपिनि चंद्र पाल की जेल से रहिाई का जश्न मनाने और स्वराज का झंडा फहराने के लिये एक वशाल जुलूस निकालने का संकल्प लिया।
- **कृतियाँ:** मेयाराम (1914), मेयारवि (1915), एंथोलॉजी (1915), आत्मकथा (1946), थरिुकुरल के मनकुदावर के साहित्यिक नोट्स के साथ (1917), टोलकपयिम के इलमपुरनार के साहित्यिक नोट्स के साथ (1928)।
- **मृत्यु:** चर्दिबरम पल्लिई की मृत्यु 18 नवंबर, 1936 को भारतीय राष्ट्रीय कॉंग्रेस कार्यालय तूतीकोरनि में हुई।

स्रोत: द द्रिष्टि

PDF Reference URL: <https://www.drishtias.com/hindi/printpdf/v-o-chidambaram-pillai-1>

